Mercantilism

Discuss the economic ideas of Mercantilism. Is it proper to call it the School of Economic Thorough?

Ans:- **Mercantilism comprises the economic Vience with prevailed among European statement from 16th to the latter past of the 18th century's Hersey**- वाणिकवाद उस आर्थिक विचारधारा का नाम है जो पश्चात् यूरोप विशेष रूप से फ्रांस इंग्लैण्ड तथा जर्मनी में 16वी., 17वी तथा 18 वी0 शदी के प्रथम दशक में विद्यमान थी। फ्रांस में यह विचारधारा calbor Hism जर्मनी तथा आँर ऑस्ट्रिया में Camertism तथा England में Mercantilism के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वाणिकवादी जिसमें मुख्य रूप से कुशल व्यापारी प्रशासन तथा व्यापार में रूची रखने वाले राजकुमार। सम्मिलित थे। राष्ट्रीय आर्थिक प्रमुख को प्राप्त करने के उद्देश्य से वाणिकवादियों ने विदेशी व्यापार का अधिक महत्वपूर्ण माना। वाणिकवाद बहुमूल्य धातुओं को एकत्रित करने का उपाय बन गया। इसलिए कुछ लेखकों ने इसे 'बहुमूल्य धातुवाद कहा। वाणिकवाद में व्यापारियों का महत्वपूर्ण स्थान था। इसलिए कुछ लेखकों ने वाणिकवाद को व्यापार प्रणाली (Mercrartite system) कहकर सम्बो धित दिया। सबसे अधिक वाणिकवाद लेख 17 वी0 शदी में प्रकाशित हुए थे। अत: यह कहा जा सकता है कि मुद्रा । अर्थव्यवस्था की प्रगति तथा राष्ट्रों की उत्पत्ति, वाणिकवाद की दो आधार शीलाएँ थी। और उसका अंत औद्योगिक है प्रांति तथा राजनैतिक स्वतंत्रता की प्रगति के साथ हो। गया था।

Keynes, in his book The Scope and Method of Political Economy

observed: → " No writer can altogether free himself from the characteristic influence of his age and Country. Is it desirable that we should do so? It follows that the theories of the past can not be propelly understand, af Their validity fairly estimated unless they are taken in connection with the actual phenomena. That was at the time attracting attention and helping to reveal and Colour mess Views."

वाणिकवादी सिद्धांत को विस्तृत रूप से जानने लिए यह आवश्यक है कि उस समय के उन सामाजिक राजनैतिक कृषि विज्ञान सम्बन्धी परिस्थितियों तथा उन परिवर्तनों का अध्ययन करना होगा जो यूरोप में 13 वी० और 14 वी० शताब्दी में हो रहा था।

(1) आर्थिक कारण : → 15वी0 शदी के अंत में समाज के आर्थिक दाँचे में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे। घरेलू अर्थ- व्यवस्था के स्थान पर विनिमय अर्थव्यवस्था को महत्व दिया जाने लगा। कृषि उत्पादन में कमी हो गया क्योंकि सामंतवादी प्रक्रिया समाप्त हो चली थी। निर्माण उद्योग का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। उस समय विनिमय का क्षेत्र विस्तृत हो रहा था और आंतरिक और विदेशी व्यापार तेजी से बढ़ रहा था। स्थानीय एकाधिकार और गिल्ड प्रणाली भी भिन्न-भिन्न हो गई थी।

अर्थव्यवस्था में निर्माण उद्योग का महत्व बढ़ने से श्रमिक वर्ग को का उदय हुआ। औद्योगिक उत्पादन का आकार उपयोगिता के आधार पर निश्चित होने लगा' मुद्रा की माँग बढ़ गयी जिसकी पूर्ति सोने-चाँदी से की जाने लगी। मूल्य बढ़ने से सरकार और श्रमिकों की समस्या बढ़ गयी। सरकार का आय प्राप्त करने के लिए औद्योगिक करारोपण का सहारा लेना पड़ा ' इन सब कारणों से मुद्रा का महत्व बढ़ गया तथा बचत और बैंकिंग व्यवसाय व्यवसाय को प्रोत्साहन मिला इन परिवर्तनों के साथ-साथ जनसंख्या में वृद्धि हुई, परिवहन के सस्ते साधन उपलब्ध हुए और कृषि की उन्नत विधियों का भी उपयोग का भी उपयोग हुआ वाणिकवादी अधिकाश इन्ही सब कारणों का परिणाम था।

(2) राजनीतिक कारण:→राजनीतिक कारण भी वाणिकवाद के उदय का महत्वपूर्ण कारण है। मध्ययुग में शासक सर्वोच्च था इस युग के बाद राष्ट्रीयता जोर पकड़ने लगी। यूरोप में सामंतवाद का पतन होने लगा और साथ ही साथ विश्व बंधुत्व की भावना का भी अंत हो गया। इसके स्थान पर एक शक्तिशाली केन्द्रीय राज्य तथा प्रभावशील सरकार की स्थापना की आवश्यकता महसूस की जाने लगी' England के इतिहास में यह परिवर्तन ट्यूडर शासकों के रूप में परिलक्षित हुआ' राजाओं की शक्ति में न केवल वृद्धि हुई वन वह व्यापक भी हो गयी। सैद्धांतिक रूप से राजा को प्रजा का पिता समझा जाने लगा। एक देश में रहने वाले लोग समान हितो में बंध गए एवम् राजा का यह कर्तव्य हो गया कि वो प्रजा के हितों का ख्याल रखें।

इन सभी उद्देश्यों को लेकर England, france, spane Purrgaul जैसे शक्तिशाली देशों का विवस हुआ। आर्थिक 'दृष्टि से इन राज्यों को मजबूत बनाने के लिए वाणिकवादी नीतियों का सहारा लिया गया। इस प्रकार वाणिकवाद है। प्रोसाहन मिला।

Machiavelli एक शक्तिशाली शास एवम् प्रभावपूर्ण सरकार की स्थापना पर बल दिया गया। उसने अपनी पुस्तक " The prince में एक शक्तिशाली राजा की आवश्यकता पर जोर दिया। तथा इसे किस प्रकार शक्ति- शाली बनान बनना चाहिए यह भी बताया। Jean Bendic का विचार था कि सम्प्रभुता राज्य की सबसे बड़ी शक्ति होती है। उन्होंने भी शक्तिशाली राज्य की स्थापना पर जोर दिया? Alexander विचार था कि " वाणिकवाद एक साधन ही था जिसका वास्तविक उद्देश्य एक शक्तिशाली सरकार एवम् राज्य की स्थापना करना था। "

3.) धार्मिक कारण:- 16 शताब्दी में धार्मिक परिवर्तन ने चर्चा की प्रमुख को अस्वीकार कर दिया तथा राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों में पोप की अन्तराष्ट्रीय सत्ता की चुनौती दी' प्रोटेस्टेलवाद ने ईसाई धर्म को अधिक तर्क संगत व्याख्या की और मनुष्य की जीवन में मुद्रा, आर्थिक प्रलनों और मितलयता के महत्व को दर्शाया क्योंकि सैयोलिकवाद का उद्देश्य था कि मनुष्य का सभी भौतिक वस्तुओं से दूर रखना चाहिए प्रोटेस्टेटवाद ने व्यक्तिगत और वैयक्तिक स्वतंत्रता के विचारो को भी महत्व दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि यूरोप में राजा और व्यापारी वर्ग ने प्रोटेस्टेट धर्म अपनाये और रोम चर्च से नाता तोड़कर अपने चर्च स्थापित किये। रोम-चर्च की सत्ता की जड़े खोखली हो गयी और राजा का प्रतिद्धन्दी नष्ट हो गया। यह भी, महत्वपूर्ण परिवर्तन था। मध्यकालीन युगयातो सामंतों से प्राप्त होती है थी या रियासतों से। राजा ने कर लगाना आरंभ किया तथा बेतन भोगी सैनिक नियुक्ति किये। उनके अनुसार उस धन का अधिक महत्व था जो अन्तराष्ट्रीय व्यापार ये प्राप्त होती थी। इसके अतिरिक्त वाणिज्य तथा व्यापार से प्राप्त होने वाली आयु भी राजा को मिलना था। और उसके प्रतिहन्दी को इससे कोई लाभ नहीं होती था। राजा मध्य वर्ग को बढ़ावा देता और उनके अधिकारों ही रक्षा करता था क्योंकि उसे मध्य वर्ग से आय प्राप्त होता था और चर्च तथा उसके प्रतिइन्द्रीयों पर भी नियंत्रण रखता था। झपरिवर्तनो का भी प्रभाव वाणिकवादी विचारधारा पर पडा था।

4) सांस्कृतिक परिवर्तन: कला-कौशल तथा नवीन जानकारी ने यूरोप में सांस्कृतिक परिवर्तन ला दिया। मध्य युग में धर्म उपदेश का कहना था कि मनुष्य को एक सांसारिक दुःख की चिंता नहीं करनी चाहिए। क्योंकि इन दुःखों की पूर्ति स्वगीय आनन्द से हो जायगी। लेकिन कला-कौशल एवम् जानकारियाँ ने यह बताया की मनुष्य का जीवन स्वर्ग के जीवन की अपेक्षा, अधिक महत्वपूर्ण है। उस समय के साहित्यक लेखों में एक आदर्शवादी समाज का चित्रण किया और तात्कालिक समाज की चुनौती दी थी। परिणामतः मुद्धा की स्थिति और भी मजबुत हो गयी और मानवीय सम्बन्धों में उसने एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया।

5 वैज्ञानिक तथा तकनीकी परिवर्तन: वैज्ञानिक तथा तकनीकी परिवर्तन ने वाजिकवादी विचारों तथा नीतियों को अधिक बल दिया। नये अविष्कारों में कम्पास तथा छापेखाने के अविष्कार अत्यन्त महत्वपूर्ण

सिद्ध हुए। अब जहाजरानी अधिक सुविधाजनक हो गयी। नये-नये दिपों जैसे 1992 में America तथा-1498 में India के लिए न ये भाग की खोज से कच्चे माल की जानकारी प्राप्त हुई। व्यापार का क्षेत्र विस्तृत हुआ और क्षेत्रीय विशिष्तिर विशिष्टीकरण का बढ़ावा मिला !

Cuningham के अनुसार व्यापार का विस्तार आधुनिक दिशाओं में होने लगा तथा अब व्यापारीयों को अपनी पूंजी प्रयोग करने की अधिक स्वतंत्रता थी। पूंजी का विनियोग अधिक लाभप्रद उपयोगों के लिए किया जाने लगा

उपर्युक्त कारणों ने वाणिकवादी विचार- स धारा को फलीभूत होने के लिए उपर्युक्त वातावरण दिया! वास्तव में वाणिकवाद मध्यकालीन वाद के विरूध एक प्रक्रिया थी। जिससे स्वतंत्र उपयोग से राष्ट्रीवादी राज्यों ने अपनी स्थिति को मजबूत बनाया था।

Main Relies and theories of mercratilism:-

वाणिकवादियों का मुख्य उद्देश्य राज्य को शक्तिशाली बनाना था। और राज्य के आर्थिक पक्ष का सुदृढ़ बनाने के लिए. उन्होंने धन के संग्रह पर अधिक जोर दिया

According to Brie Rules:-The theories which the involved were never contained in a of doctrine Such as that of the Cown law, what appearance is has it possible to speak of mercantilism in the number of Countries of a Set of theories of which explained or underley the practices of statesmen for a considerable time."

वाणिकवाद के प्रमुख विचारों को निश्व रूप से रखा जा सकता है : →

(1) बहुमूल्य धातुओं व मुद्रा का महत्व:-

माणिकवादीयों ने सोना और चौदी को विशेष महत्व दिया। लगभग सभी लेखक सोने व चाँदी को धन का सबसे महत्वपूर्ण रूप समझते थे। उनका कहना था कि एक देश उतना ही उन्नत शक्तिशाली व समृद्ध होगा जिला अधिक उसके पास सोना, चौदी व बहुमूल्य धातु होगी। उस समय यह नारा था "more Gold more wealth more power" उस समय सभी आर्थिक क्रियाओं का उद्देश्य अधिकाधिक सोने है। एकत्रित कसा बन गया था। sir willim pettey के अनुसार : "विदेशी व्यापार का अंतिम उद्देश्य धन प्राप्त करना नहीं है परंतु विशेष रूप से प्रचुर मात्रा में सोना चाँदी एवम् हीरे, जवाहरात प्राप्त करता है, जो न तो नष्ट होते है और न अन्य धातुओं के अनुसार परिवर्तनशील होते है बस सदैव प्रत्येक स्थान: पर धन ही रहते है।"

वाणिकवादीयों ने जो मुद्रा को सम्पति का, सबसे अधिक वांछनीय रूप माना वह तत्कालीन दशाओं का ही परिणाम था एवं प्राकृतिक था। व्यापार का विषय युद्ध नीति के परिवर्तन, और मजदूरी प्रणाली में परिवर्तन इत्यादि ऐसे कारण थे जिन्होंने मुद्रा को एक नया महत्व दिया। वाणिकवादीयों के मुद्रा सम्बधी दृष्टिकोणों को स्पष्ट करते हुए कहा जाता है वि-Comercial Capitalism gave a fresh impetus to this view, in the period is which commerce was the dominating force of economic development. The Circulation of goods was the essence of economic activity, It's end the accumulation of money. Corresponded to transnational ideas of wealth, " and of the aim of national policy. "Eric Roll

वाणिकवा दीयों द्वारा बहुमूल्य धातुओं और मुद्रा को इतना महत्व दिया गया। इसके निम्नलिखित कारण थे:-

(1) उस समय सोना चाँदी ही ऐसी वस्तु थी जिसको व्यापक रूप में मुद्रा के रूप में स्वीकार किया जाता था।

(2) युद्ध को जीतने के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता होती थी।

(3) केन्द्रीय संगठित राज्य की सुधारू रूप से चलने के लिए करों की वसुली आवश्यक हो गई थी। वस्तु विनिमय के समय में राज्य को वस्तु के रूप में कर वसूली करना कठीन था। इसलिए मुद्रा को महत्व दिया गया।

4. उन दिनों सिल्ड, मसालों व शराब का व्यापार मुख्य रूप से किया जाता था। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से मनुष्यों के लिए झं निकृष्ठ वस्तुओं के स्थान पर सोना व चाँदी रखना अधिक स्वाभाविक था।

(5) वाणिकवादी का विश्वास था कि व्यापार पर्याप्त मुद्रा पर ही निर्भर करती है।

(6) उन दिनों आज के समान मुद्रा विनियोग करते है अवसर उपलब्ध नहीं थे। इसलिए लोग सोने-चाँदी की जमा करते चौ थे।

(2) विदेशी व्यापार:→ वाणिकवादीयों का विश्वास था कि सोना-चाँदी प्राप्त करने का एक मात्र साधन विदेशी व्यापार ही है। mun को इस बात पर अटुट विश्वास था कि सभी राष्ट्र जिनके पास अपनी खाने नही है, व्यापारक द्वारा विदेशी से सोना, चाँदी प्राप्त कर धनवान बन सकते है। mun का कहना था कि " विदेशी व्यापार ही साधारण साधन है। इसके प्रोत्साहित करना चाहिए क्योकि इसी पर माना की आय, राज्य शासन की प्रतिष्ठा, व्यापारी का व्यवसाय. हमारी कला

शक्ति की पूर्ति, भूमि की उन्नति नाविको का पालन-पोषण, राज्य की सीमा कोष के साधन, युद्ध करने की शक्ति एवम् शत्रुओं का भय निर्भर करता है। " उसके अनुसार जो धन इस प्रकार प्राप्त किया जायेगा वह सदैव ही राज्य में रहेगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में वाणिकवादीयों के जो विचार थे वे मुद्रा सम्बन्धी विचारो पर आधारित है। उनका विश्वास था कि कोई भी राष्ट्र अपने धन को केवल विदेशी व्यापार द्वारा ही बढ़ा सकता है। क्योंकि घरेतू यापार से केवल धन का स्थानातरण जनसंख्या के खु भाग से दूसरे भाग को ही हो पास है। child का कहना था कि :- "अ उद्योगों को सबसे अधिक प्रोसाइन देना चाहिए जिनके जहाजरानी का सबसे अधिक प्रयोग किये जाये।"

mum ने भी कहा है कि - "हमारे निर्यातों का मूल्य और. अधिक हो सकता है यदि हम उनको अपने जहाजों द्वारा पहुंचाये क्योंकि व्यापारियों को न केवल वस्तुओं का ही मूल्य प्राप्त होता है

3. जनसंख्या सम्बन्धी विचार → वाणिकवादी तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या के पक्ष में थे। क्योंकि उनका विचार था कि इसके द्वारा देश की सैनिक तथा उत्पादन, क्षमता में वृद्धि होती है। उनका मानना था कि सस्ते श्रमिक मिलने से उत्पादन लागत कम होगा और विश्व बाजार में प्रतियोगिता सरल होगी! Davenant के अनुसार:- " किसी भी देश की वास्तविक शक्ति उसकी जनसंख्या पर निर्भर करती है।" fortrey का कहना था कि :-जासंख्या और बहुतायत उचित व्यवस्था होने से एक दूसरे को लाभ- प्रदान करते है।" Child का कहना था कि- "अच्छे नियम और अधिक जनसंख्या किसी भी देश को धनवान बनाने के मुख्य साधन होते है।" fortrey ने तो यहाँ तक कह दिया कि दुसरे देशों में आनेवाले लोगों को पूर्ण वतंत्रता दे देनी चाहिए क्योंकि वे अपने साथ धन लायेंगे और देश को धनवान बनायेगे। क्योंकि माणिकवादी था धन के एकत्रिकरण पर अधिक जोर देते है इसलिए वे समझते है कि बड़ी जनसंख्या देश की समृद्धि का एक प्रमुख साधन है।

4) मजदूरी तथा लगान

वाणिकवादीयों ने मुख्य रूप से उत्पादन की समस्याओं का अध्ययन किया था और वे वितरण की समस्याओं को विशेषकर वे लगान और मजदूरी से सम्बन्धित थे, अधिक महत्व नहीं देते थे। child इस बात के पक्ष में नहीं थे कि मजदूरी का नियंयन लिया जाए! Pety का विचार था कि श्रम हा मूल्य उसके द्वारा उत्पन्न की गई वस्तु पर निर्भर करता है क्योंकि इन विचारों का विस्तार से विश्लेषण नहीं किया गया है इसलिए हम इन्हें सिद्धांत न कहकर केवल ऐसे वाक्य कह सकते है जिनको चलते- फिरते ही कह दिया है।

5 ब्याज सिद्धांत:

mum जो ब्याज लेने के पक्ष में थे उनका विचार था कि महाजनी न केवल निर्धन व्यापारियों को पूंजी देती है बल्कि विधवाओं, अनाचों एवम् अन्य व्यक्तियों का व्यापार करने के लिए अपनी पूंजी का प्रयोग करने वा अवसर भी देती है। जो अन्य परिस्थितियों में सम्भव नहीं होता है। manley, Lacke, dudley, marth इन्हीं विचारों के समर्थक थे। दुसरी ओर Davenents इसकी कट्टर विरोधी थे। वे ब्याज हो एक अनाजिते आप समझता था और उयाज लेने वालो को आलसी मनुष्य कहता था। उसका कहना था कि ब्याज लेने वालों पर कर, लनाना चाहिए?

सच तो है कि लेखको ने ब्याज लेने के विषय पर अधिक मतभेद नहीं था। मतभेद केवल इतना था कि ब्याज की दर कितना हो? mun तथा इसके समर्थकों का विचार था कि व्याज की दर देश की औद्योगिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। अधिकांश वाणिकवादी ऊँची ब्याज दर के पक्ष में नहीं थे। कुछ का यहाँ तक कहना था कि कानून द्वारा व्याज की दर को नीचा रखा जाय। child के अनुसार ब्याज की नीची दर मनुष्यों के परिश्रम तथा मितव्य बनाती